IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

सामाजिक और आत्मिक संघर्ष की कहानी : हिंदी की लम्बी कविता

डॉ. अजय कुमार बिन्द

असि. प्रो. राजकीय महाविद्यालय नानौता सहारनपुर

Email: drajaybind@gmail.com

आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक तरह से महाकाव्यों, खण्डकाव्यों का अभाव दिखाई देता है। प्रिय प्रवास, साकेत, कामायनी, कला और बूढ़ा चाँद जैसी इक्का दुक्का कृतियों के अतिरिक्त महाकाव्यों की चर्चा अब समाप्त प्राय हो गई है। महाकाव्यों का स्थान एक नए प्रकार का काव्य-रूप लम्बी कविताओं ने ले लिया है। निराला की **'राम की शक्ति पूजा'**, **'सरोज स्मृति**, **'कुकुरमुत्ता'**, **'बन बेला'**, **'तुलसीदास'**, **मुक्तिबोध की 'अंधेरे में'**, **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'**, **अज्ञेय की 'असाध्यवीणा'**, **त्रिलोचन की 'नगई महरा'**, **नागार्जुन की 'हरिजन गाथा'**, **धूमिल की 'मोचीराम'**, **रघुवीर सहाय की 'आत्महत्या के विरुद्ध'**, **सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की 'कुआनो नदी'**, **केदारनाथ सिंह की 'बाघ'**, **लीलाधर जगूड़ी की 'बलदेव खटिक'** आदि कविताओं की उठान और उदात्त महाकाव्यात्मक हैं, लेकिन अपनी संवेदना और रचना - विधान में महाकाव्य के मानकों से इसकी तुलना नहीं की जा सकती।

वैसे तो लम्बी कविताओं के रचना- विधान पर चर्चा होती रहती है विशेष तौर पर निराला और मुक्तिबोध के सन्दर्भ में। लम्बी कविताओं के रचना- विधान पर विमर्श अब तक दो तरह से हुआ है। पहला - आधुनिक युग में महाकाव्य की अनुपस्थिति तथा महाकाव्य के रूप में उपन्यास का उदय। दूसरा, सामाजिक सन्दर्भ तथा रचना के आन्तरिक द्वन्द्व के सवाल को लेकर। अंग्रेज समीक्षक रैल्फ फाक्स पहले बिन्दु से अपनी चर्चा प्रारम्भ करते हैं। उनका मानना है कि आधुनिक युग में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

एक नए रूप - उपन्यास के उदय से आधुनिक जटिल जीवन की सघन अभिव्यक्ति को संभव बनाया। इस रूप में उपन्यास ही महाकाव्य है। महाकाव्यों की रचना की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए फाक्स ने लिखा है कि 'महाकाव्यों का जन्म उस समय का है जब मनुष्य और प्रकृति में युद्ध ठना था। सामूहिकता जिसका मूल तत्त्व था। आधुनिक युग में व्यक्ति व समाज का युद्ध ठना है। उपन्यास व्यक्ति के जीवन - संघर्ष की नामगाथा है।"[1] फाक्स के विश्लेषण से अलग नामवर सिंह ने अंग्रेज कवि डब्ल्यू. बी. एट्स के हवाले से लिखा है कि जब हम अपने बाहर संघर्ष कर रहे होते हैं तो कथा-साहित्य की सृष्टि होती है और अपने आप से लड़ते हैं तो गीत काव्य की। लेकिन एक तीसरी स्थिति होती है जब हम अपने आप से लड़ते हुए बाहरी स्थिति से भी लड़ने की कोशिश करते हैं और तब एक विशेष प्रकार की लम्बी कविताएँ पैदा होती हैं, जो आधुनिक कविता की सबसे बड़ी उपलब्धि है। नामवर जी के कथनानुसार आत्मपरकता और वस्तुपरकता का द्वन्द्व ही लम्बी कविताओं की मूल संवेदना ठहरती है। निराला की लम्बी कविताओं पर विचार व्यक्त करते हुए डॉ. दूधनाथ सिंह ने अपनी पुस्तक 'निराला : आत्महन्ता आस्था' में स्वीकार किया है कि लम्बी कथात्मक रचनाओं (उपन्यास) की मौजूदगी ने कवियों के सामने नई चुनौती प्रस्तुत कर दी। बिना कथात्मक विन्यास के महाकाव्य संभव नहीं हो सकता है। गद्य द्वारा प्रस्तुत इस चुनौती को पहली बार जाने-अनजाने प्रसाद तथा निराला ने स्वीकार किया और उसे हल किया। प्रसाद ने कामायनी में कथा - विन्यास को सीमित कर भावात्मक तथा संवेदनात्मक वृत्तान्तों को विस्तार दिया तो निराला ने एक नया काव्य रूप ही गढ़ा, जिसे हम लम्बी कविता के रूप में जानते हैं।

सारांशतः आधुनिक युग में महाकाव्यों के स्थान पर लम्बी कथात्मक विन्यास वाले गद्य रूप उपन्यास ने अपने को स्थापित तथा कविता के क्षेत्र में कथा - विन्यास को अनुपस्थित कर लम्बी कविताएँ अस्तित्व में आईं। नन्दकिशोर नवल ने चार लम्बी कविताओं की भूमिका में लिखा है कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

'भावुकता तथा आत्मपरकता यदि कविताओं की प्रेरणा भूमि है तो सामाजिक संघर्ष लम्बे कथात्मक आख्यान की प्रेरणाभूमि है । 2

वस्तुतः बीसवीं शताब्दी का पूरा इतिहास संघर्ष, स्वप्न और उसके टूटने बिखरने का इतिहास है। जहाँ आधुनिक युग की मूल संवेदना और आत्मसंघर्ष, सामन्तवादी व्यवस्था -पूँजीवाद-विरोधी क्रांति ने समाजवाद का नया संसार रचा, वहीं उपनिदेशवाद विरोधी संघर्ष ने 'अपनी ही जमीं होगी, अपना ही आसमां होगा' का राग गान किया।लेकिन बाद में राष्ट्रीय क्रान्ति से प्राप्त हुई नई सत्ताओं के रंग ढंग ने मानवता के महान सपनों को धूल- धूसरित कर डाला। युद्ध, तनाव, बेरोजगारी, सत्ताओं के बनाने - बिगाड़ने के खेल तथा मानवाधिकारों व जनतंत्र के नाम पर होने वाले खूनी संघर्षों में मानवता बार-बार लहू-लुहान होती गई। 'शीतयुद्ध को गोलन्दाजी' के आक्रमण ने पूरी शताब्दी को रक्त-रंजित इतिहास में बदल डाला। विद्रोह, दमन, सत्ता के उत्थान-पतन के खेल के बीच आम आदमी टूटता है। अपने समय के रक्त-रंजित और भयावह यथार्थ के बीच कवि कभी अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति 'आत्म संभवा की तलाश' करता रहा तो कभी 'आत्महत्या के विरुद्ध' संघर्ष करता रहा। 3 कवि तथा कविता आत्मकेन्द्रित हुई लेकिन बाहर के यथार्थ से विमुख नहीं, बल्कि बाहरी यथार्थ के दबाव और तनाव के साथ। पहले चरण में कवियों ने अलग-अलग इन तनावों व दबावों को अभिव्यक्त किया। **'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' और 'धन्ये मैं पिता निरर्थक था'**4 जैसी पंक्तियाँ इसी आत्मसंघर्ष का परिणाम थीं। लेकिन अन्याय का शक्तिशाली आतंक और अपने संघर्ष की निस्सारता तथा आत्मविश्लेषण ने 'बाहर और भीतर की तनावपूर्ण स्थिति के बीच पिस जाने की त्रासदी'5 का नया आख्यान गढ़ने के लिए कवियों को मजबूर कर दिया। लम्बी कविताएँ इसी तनावपूर्ण आत्मस्थितियों की अभिव्यक्ति का परिणाम थीं। लम्बी कविताओं पर दीर्घ काल से शोधरत नरेन्द्र मोहन की सार्थक टिप्पणी है कि बीसवीं शताब्दी में लम्बी कविताओं का माध्यम आधुनिक युग की एक जरूरत की तौर पर उभरा। यह कोई आन्दोलन नहीं, जैसा कि कुछ लोग कह

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

देते हैं। इस जरूरत का एहसास शताब्दी की शुरुआत में ही हो गया था। आधुनिकता के दबाव से जैसे-जैसे मूल्यगत संक्रमण की प्रक्रिया तेज होती गई और सामाजिक ढाँचे में तब्दीली का आभास होता गया, वैसे-वैसे कविता के चरित्र में कविता रचने के प्रकार में रूप-विधान व संरचना में परिवर्तन आने लगे। लम्बी कविताओं को सामाजिक ढाँचे में घटित होने वाले परिवर्तनों के सामने रखकर देखने से इन कविताओं के एक जरूरी काव्य - माध्यम के तौर पर उभरकर सामने आने में सन्देह नहीं रह जाता'6 देश व दुनिया के भयावह यथार्थ ने रचनाकार को अन्तर्मुखी बना दिया। वास्तव में आजादी के बाद का सामाजिक यथार्थ अत्यन्त भयावह था। सत्यकाम ने नई कहानी के संदर्भ में लिखा है 'दो सौ साल की पराधीनता के बाद मिली आजादी अपने में एक बड़ी उपलब्धि थी लेकिन आजादी मिलने के साथ ही उस पर ग्रहण लग गया। आजादी मिलते ही देश का विभाजन हो गया। शरणार्थियों और विस्थापितों के भूखे, नंगे और अन्दर-बाहर से घायल काफिले से देश की आत्मा घायल होने लगी। सारा देश खून से लथपथ हो गया। हत्याओं और नृशंसताओं का नंगा नाच होने लगा। भाई ने भाई को पहचानने से इनकार कर दिया। पिछला सब कुछ राख हो गया।7 रचनाकार इसी परिवेश में रहने के लिए अभिशापित था। वह कबीर की तरह जागता व रोता रहा। वह इस व्यवस्था से टकराता, टूटता, संघर्ष करता अपने मन और अन्धेरे में कैद होता रहा... वह अन्तर्मुखी होता गया। इसी परिवेश में एक लम्बी त्रासद चीख की तरह उसने अपने मन के सृजनात्मक आवेग को सघन बिम्बों और जटिल तथा बहुस्तरीय लम्बी कविताओं में सृजित किया। लम्बी कविताओं के प्रत्येक पाठ में इसी तनाव व दबाव की आवाज को सुना जा सकता है।

लम्बी कविताओं का मूल स्वर आधुनिक मनुष्य का त्रासद और भयावह यथार्थ है। आधुनिक युग की टूटन, रुदन और कराह उसकी वाणी है और महाकाव्य की पीड़ा उसके उपजीव्य हैं।अपने परिवेश के घृणास्पद रूप तथा कठिन जीवन स्थितियों का गहरा बोध लम्बी कविताओं का यथार्थ है। क्लीव

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

और बौनों के बीच कद - कामद के झगड़ों के शोर में कवि अपने समग्र सृजनात्मक स्वर में गा उठा -

ओ ! मेरे सिद्धान्तवादी मन

ओ! मेरे आदर्शवादी मन

अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया।[8]

आत्मआलोचना का ऐसा विरल स्वर तनाव और आत्म निर्वासन से उपजता है, जहाँ सामाजिक संघर्ष का स्वरूप तथा हस्तक्षेप की जगह बहुत कम बची हो। निराश व टूटन तो जैसी लम्बी कविताओं का सार तत्त्व है। जो निराला की 'सरोज स्मृति' से लेकर केदारनाथ सिंह की 'बाघ' तक फैला हुआ है। यह अलग बात है कि इसके दो स्वर और दो रूप दिखलाई पड़ते हैं। पहले में संघर्ष तथा हस्तक्षेप का आह्वान होता है तो, दूसरे में यह नियति बनकर आता है। निराला के यहाँ निराशा के गहन क्षणों में 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' या 'देखें क्या रंग भरती विमला' जैसे पद देखने को मिल जाते हैं। मुक्तिबोध के यहाँ भी गहरी निराशा के बावजूद कविता 'तू खोजकर तू शोध कर' सुनाई पड़ता है। केदारनाथ सिंह भी कहते हैं 'जीना होगा यहाँ से वहाँ तक, हवा चाहें जितनी कम हो।' लेकिन राजकमल चौधरी, सौमित्र मोहन सहित तमाम कवियों के यहाँ टूटन व निराशा नियति बनकर प्रकट होती है। सर्वेश्वर की कविता 'कुआनो नदी' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

दलदल के खड़े पेड़ जड़ से सड़ने लग गए हैं

पतियाँ काली पड़ रही हैं

कुछ दिनों और हवा की छेड़ छाड़

परिन्दों की उछल कूद

छाल की काई पर मकोड़ों का रेंगना

फिर अन्तिम क्षण तक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

दूसरों की डालियों में

अपनी डालियाँ उलझाकर

खड़े रहने की कोशिश

बस यही है यहाँ का आखिरी बयान

चाहे पेड़ हो या आदमी[9]

ऐसा ही केदारनाथ सिंह कहते हैं -

मुझे डर है

एक बेहद सीधा

और सादा डर

कि डर कहाँ होगा[10]

टूटते या सड़ते और बिजबिजाते आदमी की बयान या 'सीधा सा डर' निराशा और टूटन के गहरे क्षणों में उपजता है। यही समय है और यही यथार्थ। लम्बी कविताएँ इसी को वाणी देने का प्रयास हैं। दरअसल आजादी के बाद भारतीय औद्योगिक समाज ने व्यक्ति की पहचान खो दी। वह एक 'फेस लेस भीड़' में तब्दील हो गया। सम्बन्धों की सारी गर्माहट स्वार्थ ने सोख ली। भयानक अकेलापन, एकरसता और इससे उपजा त्रास, डर, भय, पलायन ने एकाकीपन को पैदा किया। विडम्बनाएँ तथा तनाव समय का सच बन गई। लम्बी कविताओं का मूलाधार यही विडम्बनामूलक सच बना। रघुबीर सहाय कहते हैं-

कितना आसान है पागल हो जाना

और जब उस पर इनाम मिलता हो[11]

कविता में निहित तनाव उस एक रस जिन्दगी से पैदा है, जहाँ हर तरफ का अकेलापन और कुण्ठा जड़ जमाए हुए है। लेकिन इन स्थितियों के विरुद्ध एक चीख, एक आवाज, एक परिवर्तन की बेचैनी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

भी हम सुन सकते हैं। कवि अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक पाखण्ड की विडम्बना को उघाड़ कर रख देता है। धूमिल कहते हैं -

भूल और भूख की आड़ में

चबाई गई चीजों का अक्स

उनके दाँतों में ढूँढना बेकार है

समाजवाद उनकी जुबान पर, अपनी सुरक्षा

एक आधुनिक मुहावरा है

मगर मैं जानता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद

मालगोदाम पर लटकी हुई

उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग लिखा है

और उनमें बालू और पानी भरा है।[12]

लम्बी कविताओं की रचनाभूमि मात्र अपने समय का तटस्थ चित्रण नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संघर्षों की प्रेरणाभूमि भी है। विडम्बनामूलक यथार्थ का उद्घाटन, आमजन की पीड़ा, हताश, निराशा को जहाँ कवि रचता है, वहीं आक्रोश, संघर्ष, विद्रोह, बगावत को भी वाणी देता है। साठ के बाद की कविताओं में जहाँ कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्रण है वहीं नक्सलवादी आन्दोलन, आक्रोश तथा संघर्ष की आवाज कभी लाउड तो कभी अण्डर करेन्ट (अन्तः धारा) के रूप में सुनाई पड़ती है। पटकथा (धूमिल) बलदेव खटिक (लीलाधर जगूड़ी) ऐसी कविताएँ है, जिनमें सामाजिक संघर्ष को सार्थक वाणी मिली है। यद्यपि सामाजिक चेतना और संघर्ष की गूंज निराला की 'राम की शक्ति पूजा' मुक्तिबोध की 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', और 'अंधेरे में' कविता में भी सुनाई पड़ता है। 'करो शक्ति की मौलिक कल्पना' और 'वह एक और मन रहा राम का जो न था' जैसी निराला की काव्य पंक्तियाँ हो या मुक्तिबोध की 'संकल्प धर्मा चेतना का रक्त प्लावित स्वर' या 'अब अभिव्यक्ति के खतरे उठाने ही

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

होंगे, तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब' या 'कहने की आदत नहीं है लेकिन कह दूँ वर्तमान समय चल नहीं सकता' जैसी पंक्तियाँ हैं - जिनका मूल स्वर निराशा व हताशा के बीच परिवर्तन कामी चेतना से लैस सामाजिक संघर्ष की आवाज ही है। लेकिन जैसा कि प्रो. नामवर सिंह ने कहा है कि 'सन् 1970 के बाद नक्सलवाड़ी किसान आन्दोलन ने हिन्दी कविता को हताशा निराशा तथा पस्त हिम्मती के बीच सामाजिक संघर्ष से जोड़ दिया। उसमें प्रगतिशील आन्दोलन के नए उभार को पढ़ा जा सकता है।[13] 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष' नामक पुस्तक में भी सामाजिक संघर्ष वाले सन्दर्भों की पहचान मुक्तिबोध ने की है। इस रूप में नई कविता के भीतर तथा सन् 1970 के बाद की कविताओं में सामाजिक संघर्ष को विस्तार मिला। बलदेव खटिक कविता में लीलाधर जगूड़ी कहते हैं

सन् उन्नीस सौ चौहत्तर की राजनीति में
इसके लिए कोई शब्द नहीं
मैं आपको यकीन दिलाता हूँ
बलदेव खटिक के खानदान में
कोई पागल नहीं था
आप लोग अपनी परवाह करें
अपने बच्चों की जाँच करवाएं
यह केवल अफवाह नहीं
(बल्कि जिन्दा रहने की शर्त है)
कि देश में कुछ लोग
पेट से ही पागल होकर आ रहे हैं
लेकिन जब फायर करेंगे
तो यह तय है कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

इस बार कौवे नहीं मरेंगे।

इसी प्रकार आलोक धन्वा, अरुण कमल तथा उदयप्रकाश की लम्बी कविताओं में सामाजिक संघर्ष को वाणी मिली है। ब्रूनों की बेटियाँ, गाँधी, गोली दागो पोस्टर - ऐसी कविताएँ हैं जिनकी अगली कड़ी केदारनाथ सिंह के 'बाघ' कविता में दिखाई पड़ती है। सन् 1990 के बाद जारी नई बाजार व्यवस्था ने मनुष्य को उपभोक्ता, मूल्य को बिक्री मूल्य, सम्बन्धों को बाजार भाव के सीधे किन्तु बेहद अमानवीय चक्र में डाल दिया है। सामाजिक संघर्ष की दिशा मीडिया की बहुरंगी दुनिया में खो गई है। इण्डिया शाइनिंग और फील गुड के नारे में गरीब का दुःख, किसानों व बुनकरों की आत्महत्या व हत्या, बलात्कार तथा भूख से मरने वालों के भयानक होते आँकड़े ने भारतीय यथार्थ को एक नई मंजिल में पहुँचा दिया है। मजदूरों की छंटनी, छोटो उद्योगों की ताला बन्दी और अमेरिकी साम्राज्यवादी हमलों के सामने दलाल भारतीय शासक वर्गों ने घुटने टेक दिये हैं। उक्त सन्दर्भों में केदारनाथ सिंह की लम्बी कविता 'तालस्टाय और साइकिल', 'ताल के उस पार' को देखा जा सकता है। केदारनाथ सिंह की कविताएँ अपनी आन्तरिक संरचना में समय समाज के गहरे विडम्बना मूलक यथार्थ को कहने का तनावपूर्ण प्रयास हैं।

कहने को सारांश यह है कि लम्बी कविताएँ जहाँ आत्म संघर्ष को वाणी देती हैं वहीं वे सामाजिक संघर्ष को भी विस्तार से चित्रित करती हैं। उसमें आधुनिक जीवन की जटिलता तथा उसका यथार्थ रूप व्यक्त हुआ है। मोटे तौर पर लम्बी कविताओं के तीन दौर देखे जा सकते हैं। पहला आजादी के पूर्व का दौर जहाँ कविताएँ अपने आख्यान परक ढाँचे के भीतर शाश्वत द्वन्द्वों के बरक्स अपने समय के द्वन्द्वों को प्रक्षेपित करती है। दूसरा दौर आजादी के बाद - जहाँ टूटते बिखरते सपने पर मानवीय संवेदना रहित स्वार्थ सम्बन्धों का यथार्थ, आत्म संघर्ष और सामाजिक संघर्षों के बीच का गहरा तनाव दिखाई पड़ता है। तीसरा दौर सन् 1970 के बाद की लम्बी कविताएँ दिखलाई पड़ती है जहाँ निरंकुश और अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के आवेग को वाणी दी गई है। इस रूप में लम्बी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

कविताएँ इस सम्पूर्ण दौर के बदलते यथार्थ को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनकर उभरी हैं। इसी क्रम में यह भी स्मरणीय है कि इस नए यथार्थ पर अभी लम्बी कविताओं से काफी उम्मीदें शेष हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.*उपन्यास और लोक जीवन – पृ.* 22

2.*चार लम्बी कविताएँ – भूमिका।*

3.*सन्दर्भ – राम की शक्ति पूजा व सरोज स्मृति – निराला।*

आत्महत्या के विरुद्ध – रघुवीर सहाय।

अन्धेरे में – मुक्तिबोध।

4.*राम की शक्ति पूजा व सरोज स्मृति – निराला।*

5.*ब्रह्मराक्षस – मुक्तिबोध।*

6.*नरेन्द्र मोहन – लम्बी कविताएँ – भूमिका।*

7.*सत्यकाम – नई कहानी नए सवाल – पृ.* 40-41

8.*मुक्तिबोध – प्रतिनिधि कविताएँ – पृ.* 51

9.*प्रतिनिधि कविताएँ – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – सं. प्रयाग शुक्ल, पृ.* 130

10.*प्रतिनिधि कविताएँ – केदारनाथ सिंह, सं. परमानन्द श्रीवास्तव – पृ.* 142

11.*लम्बी कविताएँ – सं. नरेन्द्र मोहन – पृ.* 122

12.*वही – पृ.* 310

कथारूप : अंक 5 *निराला व्याख्यान माला के अन्तर्गत दिया गया भाषण।*

14.*लम्बी कविताएँ – सं. नरेन्द्र मोहन – पृ.* 437-438